Q No.एडम स्मिथ का मूल्य सिद्धांत (Adam Smith's Theory of Value)

एडम स्मिथ (Adam Smith) को शास्त्रीय अर्थशास्त्र (Classical Economics) का जनक कहा जाता है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Wealth of Nations (1776) में अर्थशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, जिनमें मूल्य सिद्धांत (Theory of Value) सबसे महत्वपूर्ण है। इस सिद्धांत के माध्यम से उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि किसी वस्तु का मूल्य किस प्रकार निर्धारित होता है तथा किन-किन तत्वों का उस पर प्रभाव पड़ता है।

एडम स्मिथ के अनुसार, किसी वस्तु का मूल्य केवल उसकी उपयोगिता से निर्धारित नहीं होता, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि उस वस्तु के बदले बाजार में कितनी अन्य वस्तुएँ या धन प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने मूल्य को दो भागों–उपयोगिता मूल्य (Value in Use) तथा विनिमय मूल्य (Value in Exchange)—में विभाजित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी बताया कि आदिम समाज में मूल्य का निर्धारण श्रम द्वारा होता है, जबकि विकसित समाज में उत्पादन लागत मूल्य का आधार बन जाती है।

मूल्य (Value) का अर्थ

सामान्य अर्थ में मूल्य से आशय किसी वस्तु या सेवा के उस महत्व से है जिसके कारण लोग उसे प्राप्त करना चाहते हैं। अर्थशास्त्र में मूल्य का अर्थ उस शक्ति से है जिसके आधार पर कोई वस्तु अन्य वस्तुओं या धन के बदले विनिमय की जा सकती है।

उदाहरण के लिए यदि एक कुर्सी के बदले दो मेजें या ₹2,000 प्राप्त होते हैं, तो यही उसका विनिमय मूल्य है।

एडम स्मिथ के अनुसार मूल्य के प्रकार

1. उपयोगिता मूल्य (Value in Use)

उपयोगिता मूल्य का अर्थ है किसी वस्तु की वह क्षमता जिससे वह मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

उदाहरण

- पानी जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- भोजन मनुष्य की मूल आवश्यकता है।
- दवाइयाँ रोगों के उपचार में सहायक होती हैं।
- इन सभी वस्तुओं का उपयोगिता मूल्य बहुत अधिक है।

विशेषताएँ

- यह वस्तु की उपयोगिता पर आधारित होता है।
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगिता अलग-अलग हो सकती है।
- उपयोगिता मूल्य का बाजार मूल्य से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता।

2. विनिमय मूल्य (Value in Exchange)

विनिमय मूल्य का अर्थ है वह मात्रा जिसके बदले कोई वस्तु अन्य वस्तुओं या धन के रूप में प्राप्त की जा सकती है।

उदाहरण

हीरे के बदले बहुत अधिक धन प्राप्त किया जा सकता है।

सोना बाजार में अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है।

यद्यपि हीरा पानी जितना उपयोगी नहीं है, फिर भी उसका विनिमय मूल्य अधिक है।

पानी और हीरे का विरोधाभास (Water-Diamond Paradox)

एडम स्मिथ ने एक प्रसिद्ध प्रश्न उठाया जिसे "पानी और हीरे का विरोधाभास" कहा जाता है।

उन्होंने बताया कि–

पानी का उपयोगिता मूल्य अत्यधिक है, लेकिन उसका विनिमय मूल्य कम है।

हीरे का उपयोगिता मूल्य अपेक्षाकृत कम है, लेकिन उसका विनिमय मूल्य बहुत अधिक है।

इस विरोधाभास का समाधान बाद में सीमांत उपयोगिता सिद्धांत (Marginal Utility Theory) द्वारा किया गया।

एडम स्मिथ का श्रम मूल्य सिद्धांत (Labour Theory of Value)

एडम स्मिथ के अनुसार आदिम समाज में भूमि, पूँजी और मशीनों का विकास नहीं हुआ था। इसलिए वस्तुओं का उत्पादन मुख्यतः श्रम द्वारा होता था।

अतः उन्होंने कहा कि–

"किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य उसके उत्पादन में लगे श्रम की मात्रा पर निर्भर करता है।"

यदि किसी वस्तु के उत्पादन में दुगुना श्रम लगता है, तो उसका मूल्य भी लगभग दुगुना होगा।

उदाहरण यदि–

एक धनुष बनाने में 5 घंटे लगते हैं।

एक नाव बनाने में 20 घंटे लगते हैं।

तो नाव का मूल्य धनुष से लगभग चार गुना होगा।

श्रम मूल्य सिद्धांत की विशेषताएँ

श्रम ही मूल्य का मुख्य आधार है।

श्रम उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

श्रम जितना अधिक होगा, वस्तु का मूल्य उतना अधिक होगा।

आदिम समाज में लाभ और लगान का विशेष महत्व नहीं होता।

मूल्य का निर्धारण श्रम के अनुपात में होता है।

उत्पादन लागत सिद्धांत (Cost of Production Theory)

एडम स्मिथ ने आगे कहा कि विकसित समाज में केवल श्रम के आधार पर मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता।

विकसित अर्थव्यवस्था में–

भूमि

पूँजी

मशीनें

उद्यमी

संगठन

भी उत्पादन में योगदान देते हैं।

इसलिए वस्तु का मूल्य निम्नलिखित तत्वों से निर्धारित होता है–

मूल्य = मजदूरी + लाभ + लगान

(1) मजदूरी (Wages)

श्रमिकों को उनके कार्य के बदले जो भुगतान किया जाता है।

(2) लाभ (Profit)

पूँजीपति या उद्यमी को व्यवसाय से प्राप्त आय।

(3) लगान (Rent)

भूमि के उपयोग के बदले भूमि स्वामी को मिलने वाली आय।

प्राकृतिक मूल्य (Natural Price) एवं बाजार मूल्य (Market Price)

एडम स्मिथ ने मूल्य को दो भागों में भी विभाजित किया–

प्राकृतिक मूल्य (Natural Price)

जब किसी वस्तु का मूल्य उसकी वास्तविक उत्पादन लागत के बराबर होता है, तो उसे प्राकृतिक मूल्य कहते हैं।

इसमें मजदूरी, लाभ और लगान शामिल होते हैं।

बाजार मूल्य (Market Price)

- बाजार में किसी वस्तु का वास्तविक विक्रय मूल्य बाजार मूल्य कहलाता है।
- यह मांग एवं पूर्ति के अनुसार बदलता रहता है।
- यदि मांग अधिक होगी तो बाजार मूल्य बढ़ जाएगा।
- यदि पूर्ति अधिक होगी तो बाजार मूल्य घट जाएगा।
- एडम स्मिथ के मूल्य सिद्धांत की मान्यताएँ
- समाज दो अवस्थाओं–आदिम और विकसित–में विभाजित है।
- आदिम समाज में श्रम ही मूल्य का आधार है।
- विकसित समाज में उत्पादन लागत मूल्य निर्धारित करती है।
- पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) विद्यमान रहती है।
- उत्पादन के साधनों का उचित उपयोग होता है।
- आर्थिक गतिविधियों में सरकारी हस्तक्षेप न्यूनतम होता है।
- एडम स्मिथ के मूल्य सिद्धांत के गुण (Merits)
- यह आधुनिक मूल्य सिद्धांत का प्रारंभिक आधार है।
- इसने श्रम के महत्व को स्थापित किया।
- उत्पादन लागत के महत्व को स्पष्ट किया।
- आर्थिक विचारधारा के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।
- बाद के अर्थशास्त्रियों जैसे David Ricardo और Karl Marx ने इसी सिद्धांत को आगे विकसित किया।
- प्राकृतिक मूल्य और बाजार मूल्य के बीच अंतर स्पष्ट किया।
- शास्त्रीय अर्थशास्त्र के विकास की मजबूत नींव रखी।

एडम स्मिथ के मूल्य सिद्धांत के दोष (Criticisms)

- श्रम मूल्य सिद्धांत और उत्पादन लागत सिद्धांत में विरोधाभास है।
- मांग तथा उपभोक्ता की पसंद की उपेक्षा की गई है।
- सीमांत उपयोगिता के महत्व को नहीं समझाया गया।
- दुर्लभ वस्तुओं तथा कलात्मक वस्तुओं के मूल्य की संतोषजनक व्याख्या नहीं करता।
- आधुनिक अर्थव्यवस्था में मूल्य केवल लागत से निर्धारित नहीं होता।
- सरकार की नीतियाँ, कर, तकनीकी परिवर्तन और प्रतिस्पर्धा भी मूल्य को प्रभावित करते हैं।
- अन्य अर्थशास्त्रियों की राय

- David Ricardo ने श्रम मूल्य सिद्धांत को अधिक वैज्ञानिक रूप दिया।
- Karl Marx ने श्रम मूल्य सिद्धांत को पूँजीवादी व्यवस्था के विश्लेषण का आधार बनाया।
- Alfred Marshall ने बताया कि मूल्य का निर्धारण मांग और पूर्ति दोनों के संयुक्त प्रभाव से होता है।
- आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रासंगिकता

आज के समय में किसी वस्तु का मूल्य केवल श्रम या उत्पादन लागत से निर्धारित नहीं होता। मूल्य पर निम्नलिखित कारकों का भी प्रभाव पड़ता है–

मांग एवं पूर्ति

उपभोक्ता की पसंद

तकनीकी प्रगति

सरकारी नीतियाँ

कर एवं सब्सिडी

अंतरराष्ट्रीय व्यापार

प्रतिस्पर्धा

ब्रांड का प्रभाव

फिर भी, उत्पादन लागत और श्रम का महत्व आज भी मूल्य निर्धारण में बना हुआ है।

निष्कर्ष

एडम स्मिथ का मूल्य सिद्धांत अर्थशास्त्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने उपयोगिता मूल्य, विनिमय मूल्य, श्रम मूल्य सिद्धांत तथा उत्पादन लागत सिद्धांत के माध्यम से मूल्य की अवधारणा को स्पष्ट किया। यद्यपि आधुनिक अर्थशास्त्र ने इस सिद्धांत में कई संशोधन किए हैं, फिर भी यह सिद्धांत शास्त्रीय अर्थशास्त्र की आधारशिला माना जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की परीक्षाओं में इसका विशेष महत्व है। यह सिद्धांत न केवल आर्थिक विचारों के विकास को समझने में सहायक है, बल्कि आधुनिक मूल्य सिद्धांतों की पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट करता है।